

अक्षा! जिंदगी

100

नया युग | नया विश्वास | नई जिंदगी

इन्फर्टिलिटी

आंगन में गूंजे किलकारी

संतानोत्पत्ति में अक्षमता, प्रजनन संबंधी मुश्किलें या बांझपन — इस व्याधि को चाहे जो नाम दें, सच यही है कि विश्व स्तर पर, सात जोड़ों में से एक को गर्भधारण में समस्या का सामना करना पड़ रहा है। वैसे, समय पर डॉक्टरी सलाह, उपचार, व्यायाम और जीवनशैली में बदलाव से इन दिक्कतों का समाधान संभव है :



‘बांझपन’ शब्द से, प्राथमिक तौर पर और मुख्य रूप से हम यही समझते हैं कि एक व्यक्ति गर्भधारण में योगदान करने के लिए जैविक रूप से सक्षम नहीं है। एक जोड़ा यदि गर्भनिरोधक न ले रहा हो और उनके बीच साल भर तक शारीरिक संबंध कायम रहे हों, फिर भी नबी गर्भवती न हो (यदि महिला की उम्र 34 साल है) या फिर इन्हीं स्थितियों में 6 माह तक शारीरिक संबंध बनाने पर भी गर्भावस्था नहीं होती (35 से ज्यादा की उम्र तक प्रेग्नेसी के लिए ‘असफल प्रयास’ की संख्या पर असर पड़ सकता है) तो इसे बांझपन से जोड़कर देखा जाता है। ऐसे में चिकित्सक से परामर्श जरूरी है। जय महिला ‘पूरे समय तक’ गर्भ धारण नहीं कर पाती तो उस अवस्था को भी बांझपन कहा जा सकता है।

एक अनुमान के मुताबिक, आमतौर पर पूरी दुनिया में सात जोड़ों में से एक को गर्भधारण में समस्या का सामना करना पड़ता है। अधिकतर देशों में देश के विकास स्तर के अनुरूप ही गर्भधारण की दर भी है। विश्वस्तर पर बांझपन की दर 13 से 18 फ्रीसदी है, जबकि भारत में ये 10 से 20 प्रतिशत तक है। भारत में आबादी एक मुख्य मुद्दा है, लेकिन यहां भी इस समस्या के शिकार लोगों की अच्छी-खासी तादाद है। इस तरह बांझपन को ‘प्रजनन संबंधी स्वास्थ्य’ के विषय में एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है।

इस समस्या के कई जैविक कारण हैं। कुछ को चिकित्सा के जरिए टाला जा सकता है पर अधिकतर मामले आनुवांशिक होते हैं और उनकी रोकथाम आसान नहीं होती। हालांकि रोचमर्ग की जीवनशैली में बदलाव लाकर संभावित बांझपन पर नियंत्रण किया जा सकता है। हमारी जीवनशैली के साथ, जिस वातावरण में हम रहते हैं, उसका भी प्रजनन क्षमता पर बड़ा असर पड़ता है। पिछले कुछ समय से बांझपन चिकित्सकीय समस्या से कहीं अधिक, जीवनशैली की समस्या बन गया है।

यह जानना कि किन चीजों से किसी की प्रजनन